IJARETY

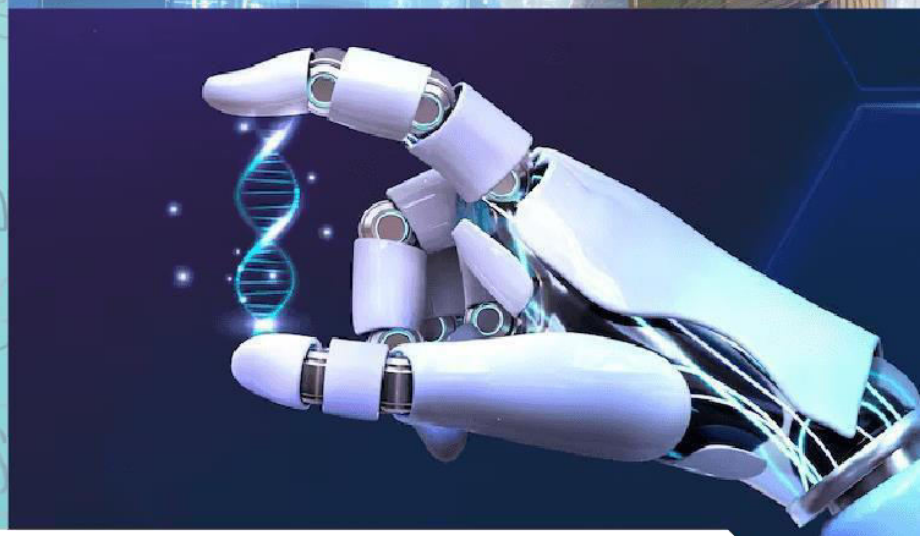

International Journal of Advanced Research in Education and TechnologY (IJARETY)

Volume 12, Issue 4, July-August 2025

Impact Factor: 8.152

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

INNO SPACE SJIF Scientific Journal Impact Factor

doi cross ref

निस्केयर NISCAIR

International Journal of Advanced Research in Education and TechnologY(IJARETY)

| ISSN: 2394-2975 | www.ijarety.in| | Impact Factor: 8.152| A Bi-Monthly, Double-Blind Peer Reviewed & Refereed Journal |

|| Volume 12, Issue 4, July - August 2025 ||

DOI:10.15680/IJARETY.2025.1204060

बाड़मेर जिले के मंदिरों का सांस्कृतिक पर्यटन में योगदान

Jyoti

NET-JRF, Subject- History, District- Barmer, India

सारांश: राजस्थान के थार मरुस्थल में बसा बाड़मेर जिला अपनी प्राचीन मंदिरों की वजह से सांस्कृतिक पर्यटन का एक अनोखा केंद्र बना हुआ है। ये मंदिर न सिर्फ धार्मिक महत्व रखते हैं, बल्कि इतिहास, कला और लोक परंपराओं को जीवित रखते हुए पर्यटकों को आकर्षित करते हैं।

ये मंदिर सांस्कृतिक पर्यटन में बड़ा योगदान देते हैं। वे न सिर्फ धार्मिक स्थल हैं, बल्कि लोक कला, संगीत और नृत्य के माध्यम से राजस्थानी संस्कृति को दुनिया से जोड़ते हैं। नवरात्रि मेलों, थार महोत्सव और मल्लिनाथ पशु मेले में पर्यटक लोक नृत्य देखते हैं, लोक गीत सुनते हैं और स्थानीय हस्तशिल्प खरीदते हैं। बाड़मेर की कशीदाकारी, लकड़ी की नक्काशी, अजरक प्रिंटिंग और मिट्टी के बर्तन इन मंदिरों के आसपास के बाजारों में बिकते हैं, जो कारीगरों को रोजगार देते हैं। पर्यटन से होने वाली आय मंदिरों के संरक्षण में लगती है और स्थानीय अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाती है। उदाहरण के लिए, नाकोड़ा मंदिर लाखों दर्शनार्थियों को खींचता है, जिससे होटल, परिवहन और दुकानें चलती हैं। ये मंदिर जैन, शिव, विष्णु और देवी पूजा के माध्यम से बहुलतावादी संस्कृति दिखाते हैं, जो सामाजिक एकता बढ़ाती है।

हालांकि, चुनौतियां भी हैं जैसे रेगिस्तानी मौसम से मंदिरों का क्षरण, सड़कों और सुविधाओं की कमी। लेकिन अगर डिजिटल प्रचार किया जाए, सरकारी योजनाओं से संरक्षण हो और स्थानीय समुदाय शामिल हो, तो सतत पर्यटन विकसित हो सकता है। कुल मिलाकर, बाड़मेर के मंदिर सांस्कृतिक पर्यटन के मजबूत आधार हैं। वे इतिहास, आस्था और विकास को एक साथ जोड़ते हैं, जिससे राजस्थान की छवि दुनिया में चमकती है। भविष्य में ये मंदिर पर्यटन को नई ऊंचाइयों पर ले जाएंगे और स्थानीय लोगों का जीवन बेहतर बनाएंगे।

मुख्य शब्द: बाड़मेर मंदिर, सांस्कृतिक पर्यटन, स्थापत्य कला, लोक परंपराएं, राजस्थान विरासत, आर्थिक विकास, सतत पर्यटन।

I. प्रस्तावना

राजस्थान के पश्चिमी छोर पर स्थित बाड़मेर जिला थार मरुस्थल का एक प्रमुख हिस्सा है, जो अपनी विशाल रेतीली भूमि और कठोर जलवायु के लिए जाना जाता है। यह जिला 28,387 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैला हुआ है, जो भारत का पांचवां सबसे बड़ा जिला है। उत्तर में जैसलमेर, दक्षिण में जालोर, पूर्व में बालोतरा और पश्चिम में पाकिस्तान की सीमा से घिरा यह इलाका 24 डिग्री 58 मिनट से 26 डिग्री 32 मिनट उत्तरी अक्षांश और 70 डिग्री 5 मिनट से 72 डिग्री 52 मिनट पूर्वी देशांतर के बीच फैला है। यहां की मुख्य नदी लूनी है, जो लगभग 480 किलोमीटर लंबी है और कच्छ की खाड़ी में जाकर समाप्त होती है। जलवायु गर्म शुष्क प्रकार की है, जहां गर्मियों में तापमान 46 से 51 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच जाता है, जबकि सर्दियों में शून्य डिग्री के करीब गिर जाता है। औसत वार्षिक वर्षा मात्र 277 मिलीमीटर है, लेकिन कभी-कभी अत्यधिक बारिश से बाढ़ की स्थिति बन जाती है, जैसे 2006 में 549 मिलीमीटर वर्षा हुई थी। मिट्टी मुख्य रूप से रेतीली है, जो मरुस्थलीय वनस्पति और जीव-जंतुओं को आश्रय देती है। यह भौगोलिक संरचना बाड़मेर को एक अनोखा पर्यावरण प्रदान करती है, जहां रेगिस्तान की चुनौतियां स्थानीय जीवनशैली को मजबूत बनाती हैं।

| ISSN: 2394-2975 | www.ijarety.in| | Impact Factor: 8.152| A Bi-Monthly, Double-Blind Peer Reviewed & Refereed Journal |

|| Volume 12, Issue 4, July - August 2025 ||

DOI:10.15680/IJARETY.2025.1204060

ऐतिहासिक दृष्टि से बाड़मेर की जड़ें प्राचीन काल से जुड़ी हैं, जब इसे मालाणी के नाम से जाना जाता था, जो रावल मल्लिनाथ राठौर से संबंधित है, जिन्हें स्थानीय लोग देवता के रूप में पूजते हैं। बारहवीं शताब्दी में यहां परमार राजवंश का शासन था, जिन्होंने जूना नामक शहर बसाया, जो वर्तमान बाड़मेर से 25 किलोमीटर दूर है। जिले का वर्तमान नाम बहड़ राव या बार राव से पड़ा, जो परमार शासक थे और उन्होंने यहां एक छोटा शहर स्थापित किया। बाद में रावत लुका, जो रावल मल्लिनाथ के पोते थे, ने परमारों को हराकर जूना में राज्य स्थापित किया। उनके वंशज रावत भीमा, एक महान योद्धा, ने 1552 ईस्वी में राजधानी को जूना से हटाकर वर्तमान बाड़मेर में स्थानांतरित किया और यहां 676 फीट ऊंची पहाड़ी पर किला बनवाया, जिसकी कुल ऊंचाई 1383 फीट है। यह किला पूर्व में जोधपुर राज्य का एक हिस्सा था, जहां नाममात्र की अधीनता थी और आपातकाल में ही सहायता दी जाती थी। बाड़मेर ऊंट व्यापार मार्ग का हिस्सा था, जो इसकी ऐतिहासिक महत्व को बढ़ाता है। यहां की प्राचीन धरोहरें, जैसे मंदिर और किले, सदियों पुरानी कहानियां बयां करती हैं, जो प्राचीन पुनिया गणराज्य से जुड़ी हैं और स्थानीय इतिहास को जीवित रखती हैं।

सांस्कृतिक परिदृश्य में बाड़मेर लोक संगीत, नृत्य और हस्तशिल्प का खजाना है। यहां भोपा समुदाय देवताओं और युद्ध नायकों के लिए संगीत रचते हैं, जबकि मुस्लिम ढोली ड्रम बजाकर जीविका कमाते हैं। लंगा और मांगणियार समुदाय लोक संगीत के लिए प्रसिद्ध हैं, जो थार की रेत पर गूंजते हैं। जिले में लकड़ी की नक्काशी, मिट्टी के बर्तन, कढ़ाई का काम और अजरक प्रिंटिंग जैसी कलाएं फलती-फूलती हैं। ऊनी उद्योग और ब्लॉक प्रिंटिंग यहां के पारंपरिक व्यवसाय हैं। त्योहारों में तिलवाड़ा पशु मेला प्रमुख है, जो रावल मल्लिनाथ की स्मृति में दो सप्ताह तक चलता है और भारत का एक बड़ा पशु मेला है। मार्च में आयोजित थार महोत्सव सरकारी स्तर पर होता है, जहां ऊंट दौड़, लोक प्रदर्शन और सांस्कृतिक कार्यक्रम पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। वीरातरा माता का ग्रामीण मेला और खंड का वैष्णव तीर्थ मेला भी अपनी पहचान रखते हैं। शीतलाष्टमी से दो दिन पहले बाड़मेर थार समारोह में बड़ी संख्या में पर्यटक आते हैं। यहां की भाषा मुख्य रूप से मारवाड़ी (61 प्रतिशत) और राजस्थानी (33 प्रतिशत) है, जबकि सिंधी और धाटकी पश्चिमी सीमा पर बोली जाती हैं। जनसंख्या में 86 प्रतिशत हिंदू, 12 प्रतिशत मुस्लिम और 1 प्रतिशत जैन हैं, जो बहुलतावादी संस्कृति को दर्शाते हैं।

सांस्कृतिक पर्यटन की अवधारणा पारंपरिक पर्यटन से अलग है, जहां पर्यटक न केवल स्थलों को देखते हैं, बल्कि स्थानीय जीवनशैली में डूब जाते हैं। यह पर्यटन सांस्कृतिक विरासत के माध्यम से भावनात्मक जुड़ाव पैदा करता है, जैसे लोक कला का अनुभव, त्योहारों में भागीदारी और धार्मिक रीति-रिवाजों का समझना। भारत में सांस्कृतिक पर्यटन सॉफ्ट पावर का माध्यम है, जो देश की विविधता, आध्यात्मिकता और सभ्यता को दुनिया के सामने रखता है। यह प्राकृतिक, सांस्कृतिक, पुरातात्विक या ऐतिहासिक स्थलों के मूल्य को जागृत करता है और स्थानीय विरासत पर गर्व की भावना उत्पन्न करता है। पर्यटक जब किसी क्षेत्र की जीवनशैली, इतिहास, कला, वास्तुकला और धर्म से जुड़ते हैं, तो यह सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा देता है। भारत में 27 विश्व धरोहर स्थलों में से 22 सांस्कृतिक महत्व के हैं, जो इस अवधारणा की मजबूती दिखाते हैं। सांस्कृतिक पर्यटन आर्थिक विकास के साथ-साथ सांस्कृतिक परिवर्तन लाता है, जहां पर्यटक और स्थानीय समुदाय दोनों लाभान्वित होते हैं। यह सिर्फ भोजन, होटल या इमारतों तक सीमित नहीं, बल्कि लोगों की परंपराओं और मूल्यों से जुड़ना है।

इस शोध का महत्व बाड़मेर के मंदिरों के माध्यम से सांस्कृतिक पर्यटन को समझने में है, जो स्थानीय समुदायों को सशक्त बनाते हैं। मंदिर पर्यटन से प्राप्त आय हस्तशिल्पियों, संगीतकारों और व्यापारियों को रोजगार देती है, जिससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था मजबूत होती है। यह विरासत संरक्षण को प्रोत्साहित करता है, क्योंकि पर्यटकों की रुचि से मंदिरों की मरम्मत और रखरखाव होता है। शोध से पता चलेगा कि कैसे ये मंदिर सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा देते हैं और राजस्थान की वैश्विक छवि को मजबूत बनाते हैं। यह अध्ययन नीति-निर्माताओं के लिए उपयोगी होगा, जो सतत पर्यटन मॉडल विकसित कर सकते हैं। कुल मिलाकर, शोध पर्यटन के आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक लाभों को उजागर करेगा, जो स्थानीय विकास को गति देगा।

| ISSN: 2394-2975 | www.ijarety.in| | Impact Factor: 8.152| A Bi-Monthly, Double-Blind Peer Reviewed & Refereed Journal |

|| Volume 12, Issue 4, July - August 2025 ||

DOI:10.15680/IJARETY.2025.1204060

II. बाड़मेर जिले के प्रमुख मंदिर: ऐतिहासिक और स्थापत्य परिदृश्य

बाड़मेर जिले के मंदिर थार मरुस्थल की रेतीली भूमि पर बिखरे हुए ऐतिहासिक रत्न हैं, जो प्राचीन राजवंशों की कहानियां और उत्कृष्ट कला को संजोए हुए हैं। ये मंदिर न केवल धार्मिक केंद्र हैं, बल्कि वे स्थापत्य कला की मिसाल पेश करते हैं, जहां पत्थरों पर उकेरी गई नक्काशी सदियों की सांस्कृतिक यात्रा को दर्शाती है। बारहवीं से सोलहवीं शताब्दी तक बने ये मंदिर सोलंकी, परमार और राजपूत शैलियों का मिश्रण दिखाते हैं, जो रेगिस्तानी जीवन की मजबूती और आस्था की गहराई को प्रतिबिंबित करते हैं। इनमें शिव, विष्णु, सूर्य देव और जैन तीर्थंकरों की पूजा होती है, जो जिले की बहुलतावादी संस्कृति को उजागर करती है। इन मंदिरों की वास्तुकला में ऊंचे शिखर, बारीक मूर्तियां और ज्यामितीय डिजाइन प्रमुख हैं, जो पर्यटकों को प्राचीन काल की झलक देते हैं। अब हम इन प्रमुख मंदिरों के ऐतिहासिक और स्थापत्य पक्ष पर नजर डालते हैं, जहां हर संरचना अपनी अनोखी कहानी कहती है।

किराडू मंदिर समूह बाड़मेर शहर से करीब 35 किलोमीटर दूर थार रेगिस्तान के किनारे पर स्थित है, जो पांच शिव मंदिरों का एक प्राचीन समूह है। ये मंदिर ग्यारहवीं और बारहवीं शताब्दी में परमार राजवंश के राजा दुषलराज और उनके वंशजों द्वारा बनवाए गए थे, जो मूल रूप से किराड़ कबीले से जुड़े थे। मुख्य मंदिर सोमेश्वर शिव मंदिर है, जो सोलंकी शैली की उत्कृष्ट नक्काशी से सजा हुआ है। यहां की दीवारों पर देवी-देवताओं, अप्सराओं और पौराणिक दृश्यों की बारीक मूर्तियां उकेरी गई हैं, जो मारु-गुर्जर वास्तुकला का बेहतरीन उदाहरण हैं। मंदिरों के स्तंभों पर जटिल पैटर्न और मूर्तियां हैं, जो खजुराहो की याद दिलाती हैं, इसलिए इन्हें राजस्थान का खजुराहो भी कहा जाता है। मूल रूप से यहां 108 मंदिर थे, लेकिन अब केवल पांच बचे हैं, जिनमें चार शिव को समर्पित हैं और एक विष्णु को। इन मंदिरों से जुड़ी रहस्यमयी श्राप की कथा पर्यटकों को खास आकर्षित करती है, जिसमें कहा जाता है कि एक संत ने शहर को श्राप दिया था कि शाम ढलते ही यहां कोई नहीं रुक सकता, वरना पत्थर बन जाएगा। यह कथा मंदिरों को और रहस्यपूर्ण बनाती है, और पर्यटक यहां की शानदार वास्तुकला और लोक कथाओं से जुड़ते हैं। मंदिरों के खंडहरों में भी उनकी भव्यता झलकती है, जहां ऊंचे मंडप और गर्भगृह की संरचना प्राचीन इंजीनियरिंग की मिसाल है।

श्री नाकोड़ा जी जैन मंदिर बाड़मेर से करीब 120 किलोमीटर दूर मेवा नगर में स्थित है, जो जैन धर्म की एक प्रमुख तीर्थ स्थली है। यह मंदिर तीसरी शताब्दी से जुड़ा हुआ है, जब यहां पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा स्थापित की गई थी। मूल रूप से यह महावीर स्वामी का मंदिर था, लेकिन समय के साथ पार्श्वनाथ को मुख्य देवता बनाया गया। मुगल काल में तेरहवीं शताब्दी में आक्रमणों के दौरान मंदिर को लूटा गया और क्षतिग्रस्त किया गया, लेकिन पंद्रहवीं शताब्दी की शुरुआत में इसे पुनर्स्थापित किया गया। शेष्ठी हरखचंदजी ने पुराने मंदिर की मरम्मत करवाई और नई प्रतिमाएं स्थापित कीं, जो नकोरनगर से लाई गई थीं। मंदिर की वास्तुकला में जैन शैली की बारीक नक्काशी प्रमुख है, जहां सफेद संगमरमर की दीवारों पर पौराणिक कथाएं उकेरी गई हैं। मुख्य प्रतिमा काले पत्थर की है, जो चमत्कारी मानी जाती है और लाखों श्रद्धालु यहां दर्शन के लिए आते हैं। मंदिर का नाम नाकोड़ा पड़ा क्योंकि गांव का नाम नाकोड़ा पार्श्वनाथ से जुड़ा है। यहां का मुख्य आकर्षण गर्भगृह की सजावट है, जहां जड़ाई काम और चित्रकारी जैन कला की समृद्धि दिखाती है। यह मंदिर जैन श्रद्धालुओं का बड़ा केंद्र है, जहां साल भर मेले लगते हैं और धार्मिक अनुष्ठान होते हैं, जो सांस्कृतिक महत्व को बढ़ाते हैं।

देवका सूर्य मंदिर बाड़मेर-जैसलमेर मार्ग पर 62 किलोमीटर दूर देवका गांव में स्थित है, जो बारहवीं या तेरहवीं शताब्दी का एक स्थापत्य चमत्कार है। यह मंदिर सूर्य देव को समर्पित है और राजपूत शासकों द्वारा सूर्य पूजा के लिए बनवाया गया था। मंदिर के खंडहरों में गणेश जी की मूर्तियां प्रमुख हैं, जो खंडित अवस्था में भी अपनी सुंदरता बनाए हुए हैं। वास्तुकला में राजस्थानी शैली की झलक है, जहां ऊंचे शिखर और मंडप की संरचना रेगिस्तानी मौसम को झेलने के लिए मजबूत बनाई गई है। दीवारों पर सूर्य देव, गणेश और अन्य देवताओं की नक्काशी है, जो प्राचीन कारीगरी की मिसाल

| ISSN: 2394-2975 | www.ijarety.in| | Impact Factor: 8.152| A Bi-Monthly, Double-Blind Peer Reviewed & Refereed Journal |

|| Volume 12, Issue 4, July - August 2025 ||

DOI:10.15680/IJARETY.2025.1204060

पेश करती है। मंदिर का निर्माण पत्थरों से किया गया है, जो समय के साथ खंडहर बन गए हैं, लेकिन उनकी भव्यता अभी भी पर्यटकों को आकर्षित करती है। यहां की संरचना में ज्यामितीय डिजाइन और पौराणिक दृश्य उकेरे गए हैं, जो सूर्य मंदिरों की परंपरा को दर्शाते हैं। यह मंदिर गांव की सांस्कृतिक पहचान है, जहां स्थानीय लोग सूर्य पूजा करते हैं और पर्यटक यहां की शांति और इतिहास से जुड़ते हैं।

रानी भटियानी मंदिर जसोल गांव में स्थित है, जो ढोली समुदाय की आस्था का प्रमुख प्रतीक है। यह मंदिर रानी भटियानी को समर्पित है, जिनका असली नाम स्वरूप कंवर था और वे जोगीदास भाटी की बेटी थीं। वे जयसलमेर के एक छोटे राज्य की राजकुमारी थीं और राजपूत राजकुमार कल्याण सिंह से विवाहित हुईं। उनकी मृत्यु के बाद परिवार पर संकट आए, जिसके बाद उनकी आत्मा को शांत करने के लिए जसोल में यह मंदिर बनवाया गया। मंदिर लोक देवी के रूप में पूजा जाता है और मांगणियार समुदाय इसे मां मानकर गीत गाता है। वास्तुकला में राजस्थानी शैली की सादगी है, जहां जयसलमेर पत्थर से बनी संरचना आकर्षक है। मंदिर में रानी की प्रतिमा है, जो चमत्कारी मानी जाती है और भाद्रपद माह की तेरस पर लाखों भक्त दर्शन करते हैं। यह मंदिर लोक परंपराओं को जीवंत रखता है, जहां ढोली और मांगणियार लोक गीतों से वातावरण गूंजता है। यहां की सांस्कृतिक महत्व यह है कि यह राजपूत इतिहास और लोक आस्था का मेल है, जो पर्यटकों को स्थानीय जीवन से जोड़ता है।

बाड़मेर किला गढ़ मंदिर शहर की पहाड़ी पर स्थित है, जो 1552 ईस्वी में रावत भीमा द्वारा बनवाया गया। यह किला मूल रूप से जूना से राजधानी स्थानांतरित करने के बाद बनाया गया था और इसमें जोगमाया देवी का मंदिर प्रमुख है, जो 1383 फीट की ऊंचाई पर है। मंदिर की वास्तुकला में राजपूत शैली है, जहां मजबूत दीवारें और ऊंचे द्वार सुरक्षा और भव्यता दिखाते हैं। यहां नागनेची माता का मंदिर भी है, जहां नवरात्रि में बड़ा मेला लगता है। किले से शहर का नजारा शानदार है, जो पर्यटकों को आकर्षित करता है। विष्णु मंदिर खेड़ में स्थित है, जो प्राचीन है और अपनी भव्यता से जाना जाता है। यह मंदिर रणछोड़ राय भगवान को समर्पित है और द्वार पर गरुड़ की प्रतिमा है। वास्तुकला में राजस्थानी शैली की नक्काशी है, जहां ब्रह्मा, भैरव और महादेव के मंदिर आसपास हैं। यह मंदिर ऐतिहासिक स्मारक है, जहां जैन मंदिर भी निकट हैं। जूना किला मंदिर पुराने बाड़मेर के अवशेष हैं, जो बारहवीं या तेरहवीं शताब्दी में बनवाया गया। यहां जैन मंदिर है, जहां 1296 और 1299 ईस्वी के शिलालेख हैं, जो समंतसिंह देव चौहान से जुड़े हैं। वास्तुकला में जैन शैली की बारीक नक्काशी है, जो प्राचीन कला को दर्शाती है। चिंतामणी पार्श्वनाथ जैन मंदिर सोलहवीं शताब्दी का है, जो पहाड़ी पर स्थित है। यह मंदिर नेमाजी जीवाजी बोहरा द्वारा बनवाया गया और मारु-गुर्जर शैली में है। यहां की नक्काशी, चित्रकारी और कांच की जड़ाई आकर्षक है, जो जैन कला की समृद्धि दिखाती है। सफेद अखाड़ा या सिद्धेश्वर महादेव मंदिर महाबार रेत टिब्बों की राह पर है, जो शिव, कृष्ण-राधा और हनुमान को समर्पित है। यह मंदिर बागीचे में स्थित है, जहां मोर घूमते हैं और शांति मिलती है। वास्तुकला में सादगी है, लेकिन सांस्कृतिक महत्व बड़ा है, जहां लोग पिकनिक और पूजा के लिए आते हैं।

ये मंदिर बाड़मेर की सांस्कृतिक धरोहर हैं, जो इतिहास और स्थापत्य के माध्यम से पर्यटकों को रेगिस्तानी जीवन की गहराई से परिचित कराते हैं। प्रत्येक मंदिर अपनी अनोखी कहानी और कला से जिले की पहचान मजबूत करता है। मंदिरों का सांस्कृतिक महत्व : बाड़मेर जिले के मंदिर केवल पत्थर की इमारतें नहीं हैं, बल्कि वे जीवंत सांस्कृतिक केंद्र हैं जो थार मरुस्थल की रेतीली धरती पर सदियों से खड़े होकर स्थानीय जीवन को अर्थ देते हैं। ये मंदिर राजस्थानी संस्कृति की आत्मा हैं, जहां आस्था, कला और परंपराएं एक साथ मिलकर एक अनोखा ताना-बाना बुनती हैं। यहां की सांस्कृतिक विरासत मंदिरों के माध्यम से पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होती है, जो न केवल धार्मिक महत्व रखती है, बल्कि सामाजिक सद्भाव और कलात्मक अभिव्यक्ति को भी मजबूत बनाती है। मंदिरों की दीवारें और मूर्तियां लोक जीवन की कहानियां कहती हैं, जहां रेगिस्तानी चुनौतियों के बीच भी उत्सव और एकजुटता का संदेश छिपा है। ये मंदिर थार की कठोरता में कोमलता का प्रतीक हैं, जो पर्यटकों को न केवल दर्शन कराने आते हैं, बल्कि राजस्थान की गहन सांस्कृतिक यात्रा पर

| ISSN: 2394-2975 | www.ijarety.in| | Impact Factor: 8.152| A Bi-Monthly, Double-Blind Peer Reviewed & Refereed Journal |

|| Volume 12, Issue 4, July - August 2025 ||

DOI:10.15680/IJARETY.2025.1204060

ले जाते हैं। अब हम इन मंदिरों के सांस्कृतिक महत्व को तीन प्रमुख पहलुओं से समझेंगे, जहां लोक परंपराएं, धार्मिक योगदान और कला संरक्षण की भूमिका स्पष्ट होती है।

लोक परंपराएं और प्रतीक के रूप में बाड़मेर के मंदिर थार की सांस्कृतिक पहचान के आधार स्तंभ हैं। इन मंदिरों की पत्थर की बारीक नक्काशी में लोक कला का गहरा समावेश देखा जाता है, जहां स्थानीय कारीगरों की हाथ की छाप हर कोने में नजर आती है। उदाहरण के लिए, किराडू मंदिर समूह की दीवारों पर उकेरी गई अप्सराओं, देवताओं और पौराणिक दृश्यों की नक्काशी लोक जीवन की झलक दिखाती है, जहां रेगिस्तानी जानवरों, ऊंटों और लोक नृत्यों के प्रतीक शामिल हैं। ये नक्काशियां सिर्फ सजावट नहीं, बल्कि लोक कथाओं का दृश्य रूप हैं, जो थार के लोगों की दैनिक जिंदगी, मौसम की चुनौतियां और उत्सवों को चित्रित करती हैं। इसी तरह, देवका सूर्य मंदिर की खंडहरों में गणेश मूर्तियां लोक प्रतीकों का प्रतिनिधित्व करती हैं, जहां गणेश जी को बाधा निवारक के रूप में देखा जाता है, जो रेगिस्तानी यात्राओं में सुरक्षा का प्रतीक है। मंदिरों की ये कलाकृतियां लोक कला को संरक्षित रखती हैं, जहां पत्थर पर उकेरे गए पैटर्न थार की कढ़ाई और चित्रकारी से प्रेरित होते हैं। नवरात्रा मेलों में मंदिरों की भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो जाती है, जहां बाड़मेर किला गढ़ मंदिर में जोगमाया देवी की पूजा के दौरान विशाल मेले लगते हैं। इन मेलों में स्थानीय लोग नृत्य, गीत और लोक नाटकों के माध्यम से अपनी परंपराओं को जीवित रखते हैं, जहां देवी पूजा के साथ-साथ सामुदायिक भोज और खेल-कूद होते हैं। थार महोत्सव में भी मंदिरों की भूमिका केंद्रीय है, जो मार्च महीने में आयोजित होता है और किराडू या नाकोड़ा जैसे मंदिरों के आसपास लोक प्रदर्शन आयोजित किए जाते हैं। यहां ऊंट दौड़, लोक गीत और नृत्य मंदिरों की पृष्ठभूमि में होते हैं, जो पर्यटकों को थार की जीवंत लोक संस्कृति से जोड़ते हैं। रानी भटियानी मंदिर में ढोली समुदाय की लोक परंपराएं विशेष रूप से जीवित हैं, जहां मांगणियार गायक देवी के गीत गाते हैं और लोक वाद्य यंत्रों से वातावरण भर देते हैं। ये प्रतीक और परंपराएं मंदिरों को थार की सांस्कृतिक धुरी बनाते हैं, जहां रेगिस्तान की कठिनाइयों में भी आनंद और एकता का संदेश छिपा है। लोक कथाओं में मंदिरों को श्राप या चमत्कारों से जोड़ा जाता है, जैसे किराडू की शाम ढलते ही वीरान होने की कहानी, जो पर्यटकों में उत्सुकता जगाती है और लोक विरासत को फैलाती है। इस प्रकार, मंदिर लोक परंपराओं को न केवल संरक्षित रखते हैं, बल्कि उन्हें नए रूप में प्रस्तुत करते हैं, जो थार की सांस्कृतिक निरंतरता सुनिश्चित करती है।

धार्मिक और सामाजिक योगदान के संदर्भ में बाड़मेर के मंदिर बहुलतावादी संस्कृति के जीवंत उदाहरण हैं, जो विभिन्न धर्मों और समुदायों को एक छत के नीचे लाते हैं। यहां जैन, शिव, विष्णु और देवी पूजा का सामंजस्य देखा जाता है, जो स्थानीय समुदायों में एकता और सद्भाव को बढ़ावा देता है। उदाहरण के लिए, श्री नाकोड़ा जी जैन मंदिर जैन श्रद्धालुओं का प्रमुख केंद्र है, जहां पार्श्वनाथ भगवान की पूजा होती है और लाखों लोग दर्शन करने आते हैं। यह मंदिर जैन धर्म की अहिंसा और शांति के सिद्धांतों को फैलाता है, जो थार के मुस्लिम और हिंदू समुदायों के साथ मिलकर सामाजिक सद्भाव बनाता है। इसी तरह, किराडू मंदिर समूह में शिव पूजा प्रमुख है, जहां सोमेश्वर शिव मंदिर स्थानीय लोगों की आस्था का प्रतीक है और शिव की शक्ति को रेगिस्तानी जीवन की मजबूती से जोड़ा जाता है। विष्णु मंदिर खेड़ में विष्णु भगवान की पूजा होती है, जो संरक्षण और स्थिरता का प्रतीक है, जो किसानों और पशुपालकों के लिए महत्वपूर्ण है। रानी भटियानी मंदिर में देवी पूजा लोक देवी के रूप में होती है, जो राजपूत और मांगणियार समुदायों को एकजुट करती है। ये विभिन्न पूजाएं थार की बहुलतावादी संस्कृति को दर्शाती हैं, जहां हिंदू, जैन और लोक देवताओं की पूजा एक साथ होती है, जो सामाजिक एकता लाती है। मंदिर सामाजिक योगदान में भी अग्रणी हैं, जहां वे शिक्षा, स्वास्थ्य और पर्यावरण संरक्षण के कार्यों में भाग लेते हैं। उदाहरण के लिए, मंदिरों के आसपास लगने वाले मेलों में समुदाय एकत्र होते हैं और सामाजिक मुद्दों पर चर्चा करते हैं, जैसे जल संरक्षण या शिक्षा। चिंतामणी पार्श्वनाथ जैन मंदिर में जैन सिद्धांतों के अनुसार पर्यावरण संरक्षण की शिक्षा दी जाती है, जो स्थानीय लोगों को रेगिस्तान की रक्षा के लिए प्रेरित करती है। सफेद अखाड़ा सिद्धेश्वर महादेव मंदिर में शिव, कृष्ण और हनुमान की पूजा सामाजिक सद्भाव को बढ़ाती है, जहां विभिन्न जातियों के लोग एक

| ISSN: 2394-2975 | www.ijarety.in| | Impact Factor: 8.152| A Bi-Monthly, Double-Blind Peer Reviewed & Refereed Journal |

|| Volume 12, Issue 4, July - August 2025 ||

DOI:10.15680/IJARETY.2025.1204060

साथ पूजा करते हैं। ये मंदिर सामाजिक योगदान के रूप में महिलाओं और बच्चों के लिए कार्यक्रम आयोजित करते हैं, जहां देवी पूजा के माध्यम से महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा दिया जाता है। थार के कठोर जीवन में मंदिर आशा का केंद्र हैं, जहां धार्मिक अनुष्ठान सामाजिक बंधनों को मजबूत बनाते हैं और समुदायों को चुनौतियों से लड़ने की शक्ति देते हैं। इस प्रकार, मंदिर धार्मिक विविधता को सम्मान देते हुए सामाजिक एकता का प्रतीक बनते हैं, जो थार की सांस्कृतिक समृद्धि को बनाए रखते हैं।

कला और शिल्प का संरक्षण बाड़मेर के मंदिरों का एक प्रमुख सांस्कृतिक योगदान है, जहां पारंपरिक कलाएं मंदिरों के माध्यम से जीवित रहती हैं और पर्यटकों को राजस्थानी संस्कृति से जोड़ती हैं। मंदिरों से जुड़ी कशीदाकारी, संगीत और नृत्य परंपराएं थार की कलात्मक विरासत को संजोए रखती हैं, जहां कारीगरों की पीढ़ियां इन कलाओं को मंदिरों के आसपास विकसित करती हैं। उदाहरण के लिए, किराडू मंदिरों की नक्काशी से प्रेरित होकर स्थानीय कारीगर पत्थर पर लोक डिजाइन बनाते हैं, जो कशीदाकारी में इस्तेमाल होते हैं। बाड़मेर की कशीदाकारी में मंदिरों के प्रतीक जैसे शिव लिंग या जैन मूर्तियां बनाई जाती हैं, जो पर्यटकों को आकर्षित करती हैं और कलाकारों को रोजगार देती हैं। नाकोड़ा जैन मंदिर के आसपास जैन कला की चित्रकारी और जड़ाई काम होता है, जहां कांच और रंगों से बनी कलाकृतियां मंदिर की सजावट से प्रेरित हैं। देवका सूर्य मंदिर में गणेश मूर्तियों की शैली स्थानीय लकड़ी की नक्काशी में दिखती है, जहां कारीगर फर्नीचर और सजावटी वस्तुओं पर ऐसे डिजाइन बनाते हैं। रानी भटियानी मंदिर में संगीत परंपरा जीवित है, जहां मांगणियार और लंगा समुदाय लोक गीत गाते हैं, जो देवी पूजा के दौरान बजाए जाते हैं। ये गीत थार की कहानियां कहते हैं और पर्यटकों को राजस्थानी संगीत से जोड़ते हैं। जूना किला मंदिर में जैन शिलालेखों से प्रेरित चित्रकला होती है, जो कागज और कपड़े पर बनाई जाती है। मंदिरों के मेलों में नृत्य परंपराएं जैसे घूमर या कालबेलिया प्रदर्शित होती हैं, जो पर्यटकों को थार की नृत्य कला से परिचित कराती हैं। सफेद अखाड़ा में बागीचे की सेटिंग में लोक नृत्य होते हैं, जो शांति और कला का मेल दिखाते हैं। ये कलाएं मंदिरों के माध्यम से संरक्षित होती हैं, जहां कारीगर मंदिरों की मरम्मत या सजावट में अपनी कला लगाते हैं। पर्यटक इन कलाओं को खरीदते हैं, जैसे कशीदाकारी वाले कपड़े या संगीत की रिकॉर्डिंग, जो स्थानीय अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाती है। मंदिर कला संरक्षण में भूमिका निभाते हैं, जहां वे कार्यशालाएं आयोजित करते हैं और युवाओं को पारंपरिक शिल्प सिखाते हैं। इस प्रकार, मंदिर राजस्थानी संस्कृति को पर्यटकों तक पहुंचाते हैं, जहां कला और शिल्प थार की पहचान बनते हैं।

कुल मिलाकर, बाड़मेर के मंदिर सांस्कृतिक महत्व के बहुआयामी रत्न हैं, जो लोक परंपराओं, धार्मिक सद्भाव और कला संरक्षण के माध्यम से थार की विरासत को अमर बनाते हैं। ये मंदिर न केवल आस्था के केंद्र हैं, बल्कि वे सांस्कृतिक पुल हैं, जो अतीत और वर्तमान को जोड़ते हैं और भविष्य की पीढ़ियों को प्रेरित करते हैं।

सांस्कृतिक पर्यटन में मंदिरों का योगदान : बाड़मेर जिले के मंदिर सांस्कृतिक पर्यटन के एक मजबूत आधार हैं, जो थार मरुस्थल की रेतीली भूमि पर बिखरे हुए इतिहास और आस्था के प्रतीक बनकर पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। ये मंदिर न केवल धार्मिक स्थल हैं, बल्कि वे राजस्थानी संस्कृति की जीवंत अभिव्यक्ति हैं, जहां वास्तुकला, लोक कथाएं और त्योहार मिलकर एक अनोखा अनुभव प्रदान करते हैं। सांस्कृतिक पर्यटन में इनका योगदान बहुआयामी है, जो पर्यटकों के आकर्षण से शुरू होकर आर्थिक विकास और सतत प्रगति तक फैला हुआ है। राजस्थान जैसे राज्य में, जहां पर्यटन अर्थव्यवस्था का एक प्रमुख हिस्सा है, बाड़मेर के मंदिर स्थानीय स्तर पर सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा देते हैं और वैश्विक स्तर पर राजस्थान की छवि को मजबूत बनाते हैं। ये मंदिर रेगिस्तानी जीवन की चुनौतियों के बीच भी सांस्कृतिक निरंतरता बनाए रखते हैं, जहां पर्यटक न केवल दर्शन करते हैं, बल्कि स्थानीय परंपराओं में डूब जाते हैं। इस योगदान को समझने के लिए हम पर्यटकों के आकर्षण, आर्थिक प्रभाव, सतत विकास और एक केस स्टडी के माध्यम से विश्लेषण करेंगे, जो बाड़मेर के मंदिरों को पर्यटन के केंद्र के रूप में स्थापित करते हैं।

| ISSN: 2394-2975 | www.ijarety.in| | Impact Factor: 8.152| A Bi-Monthly, Double-Blind Peer Reviewed & Refereed Journal |

|| Volume 12, Issue 4, July - August 2025 ||

DOI:10.15680/IJARETY.2025.1204060

पर्यटकों का आकर्षण बाड़मेर के मंदिरों से प्रेरित होता है, जहां ऐतिहासिक खंडहर और उत्कृष्ट वास्तुकला पर्यटकों को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर खींचते हैं। किराडू मंदिर समूह इसका प्रमुख उदाहरण है, जो बाड़मेर शहर से 35 किलोमीटर दूर थार रेगिस्तान के किनारे पर स्थित है। ये पांच शिव मंदिरों का समूह है, जिनकी सोलंकी शैली की नक्काशी इतनी बारीक है कि पर्यटक घंटों यहां रुककर प्राचीन कला का अध्ययन करते हैं। सोमेश्वर मंदिर की दीवारों पर उकेरी गई अप्सराओं और पौराणिक दृश्यों की मूर्तियां खजुराहो की याद दिलाती हैं, इसलिए इसे राजस्थान का खजुराहो कहा जाता है। लेकिन किराडू का असली आकर्षण उसकी रहस्यमयी कथा है, जहां लोक मान्यता के अनुसार शाम ढलते ही इलाका वीरान हो जाता है और कोई रुकने की हिम्मत नहीं करता, क्योंकि एक संत के श्राप से लोग पत्थर बन जाते हैं। यह कथा पर्यटकों में रोमांच पैदा करती है, जो फोटोग्राफी और एडवेंचर के शौकीनों को विशेष रूप से आकर्षित करती है। राष्ट्रीय पर्यटक यहां इतिहास की खोज में आते हैं, जबकि अंतरराष्ट्रीय पर्यटक रेगिस्तानी परिवेश में प्राचीन वास्तुकला का अनुभव लेते हैं। इसी तरह, देवका सूर्य मंदिर के खंडहर पर्यटकों को बारहवीं शताब्दी की यात्रा पर ले जाते हैं, जहां गणेश जी की मूर्तियां और सूर्य देव की पूजा की परंपरा सांस्कृतिक जुड़ाव पैदा करती है। ये खंडहर रेगिस्तानी मौसम की वजह से आंशिक रूप से क्षतिग्रस्त हैं, लेकिन उनकी भव्यता पर्यटकों को मोहित करती है, जो यहां की शांति और सूर्योदय-सूर्यास्त के नजारे देखने आते हैं। श्री नाकोड़ा जैन मंदिर पर्यटकों के लिए एक और बड़ा आकर्षण है, जहां तीसरी शताब्दी की धरोहर और पार्श्वनाथ भगवान की चमत्कारी मूर्ति लाखों दर्शनार्थियों को खींचती है। जैन धर्मावलंबी यहां धार्मिक उद्देश्य से आते हैं, लेकिन गैर-जैन पर्यटक मंदिर की जड़ाई काम, चित्रकारी और सफेद संगमरमर की संरचना से प्रभावित होते हैं। रानी भटियानी मंदिर जसोल गांव में लोक देवी की पूजा का केंद्र है, जहां मांगणियार समुदाय के लोक गीत और नृत्य पर्यटकों को राजस्थानी संस्कृति से जोड़ते हैं। बाड़मेर किला गढ़ मंदिर की ऊंचाई से शहर का नजारा देखना पर्यटकों को रोमांचित करता है, जहां जोगमाया देवी और नागनेची माता की पूजा नवरात्रि में मेले का रूप ले लेती है। विष्णु मंदिर खेड़ में अपनी प्राचीनता से पर्यटकों को आकर्षित करता है, जहां बाजारों के साथ मिलकर यह एक सम्पूर्ण पर्यटन पैकेज बन जाता है। जूना किला मंदिर के खंडहर और जैन शिलालेख इतिहास प्रेमियों को खींचते हैं, जबकि चिंतामणी पार्श्वनाथ जैन मंदिर की पहाड़ी पर स्थित नक्काशी और कांच की जड़ाई कला के शौकीनों को मोहित करती है। सफेद अखाड़ा सिद्धेश्वर महादेव मंदिर बागीचे और मोरों के साथ शांति का अनुभव देता है, जहां परिवार पर्यटक पिकनिक मनाते हैं। कुल मिलाकर, ये मंदिर ऐतिहासिक खंडहरों और वास्तुकला से प्रेरित पर्यटन को बढ़ावा देते हैं, जो राष्ट्रीय पर्यटकों को सांस्कृतिक जड़ों से जोड़ते हैं और अंतरराष्ट्रीय पर्यटकों को रेगिस्तानी रहस्य से परिचित कराते हैं। पर्यटक यहां आकर न केवल फोटो खींचते हैं, बल्कि लोक कथाओं और परंपराओं में डूब जाते हैं, जो सांस्कृतिक पर्यटन की सच्ची भावना है।

आर्थिक प्रभाव के मामले में बाड़मेर के मंदिर पर्यटन से प्राप्त राजस्व का बड़ा योगदान देते हैं, जो मंदिर संरक्षण, स्थानीय हस्तशिल्प बाजार और रोजगार सृजन में लगता है। नाकोड़ा मंदिर इसका प्रमुख उदाहरण है, जहां लाखों दर्शनार्थी साल भर आते हैं, जिससे आसपास के होटल, परिवहन और दुकानें चलती हैं। मंदिर के मेले और उत्सवों में पर्यटक स्थानीय उत्पाद खरीदते हैं, जैसे कशीदाकारी वाले कपड़े, लकड़ी की नक्काशी और अजरक प्रिंटिंग, जो कारीगरों की आय बढ़ाते हैं। राजस्थान में पर्यटन राज्य की अर्थव्यवस्था का 12 प्रतिशत हिस्सा है, और बाड़मेर जैसे जिलों में मंदिर पर्यटन इस योगदान को मजबूत बनाता है। किराडू मंदिर के पर्यटक यहां की गाइड सेवाओं और कैमल सफारी का लाभ लेते हैं, जो स्थानीय युवाओं को रोजगार देते हैं। देवका सूर्य मंदिर के खंडहरों में आने वाले पर्यटक आसपास के गांवों में रुकते हैं, जहां घरेलू आवास और भोजन से ग्रामीण अर्थव्यवस्था को फायदा होता है। रानी भटियानी मंदिर के लोक गीत और नृत्य प्रदर्शन मांगणियार समुदाय को आय प्रदान करते हैं, जो पर्यटकों से टिप्स और प्रदर्शन शुल्क कमाते हैं। बाड़मेर किला गढ़ मंदिर के नवरात्रि मेले में हजारों पर्यटक आते हैं, जो स्टॉलों और बाजारों से राजस्व उत्पन्न करते हैं। विष्णु मंदिर खेड़ के आसपास बाजार पर्यटकों से भरे रहते हैं, जहां हस्तशिल्प की बिक्री रोजगार सृजित करती है। जूना किला मंदिर के इतिहास प्रेमी पर्यटक स्थानीय गाइडों को काम देते हैं, जबकि चिंतामणी पार्श्वनाथ जैन मंदिर की कला पर्यटकों को जड़ाई काम की दुकानों की ओर ले जाती है। सफेद अखाड़ा मंदिर के बागीचे पिकनिक स्पॉट बनकर स्थानीय विक्रेताओं को लाभ पहुंचाते हैं। पर्यटन से प्राप्त राजस्व मंदिरों के संरक्षण में लगता है, जैसे किराडू के खंडहरों की मरम्मत और नाकोड़ा की साफ-सफाई, जो लंबे समय में अधिक पर्यटकों को आकर्षित करता है। हस्तशिल्प बाजारों में पर्यटक ऊनी उत्पाद,

| ISSN: 2394-2975 | www.ijarety.in| | Impact Factor: 8.152| A Bi-Monthly, Double-Blind Peer Reviewed & Refereed Journal |

|| Volume 12, Issue 4, July - August 2025 ||

DOI:10.15680/IJARETY.2025.1204060

मिट्टी के बर्तन और ब्लॉक प्रिंटिंग खरीदते हैं, जो कारीगर परिवारों की आय को दोगुना करते हैं। उदाहरण के लिए, नाकोड़ा मंदिर से आने वाले लाखों दर्शनार्थी बालोतरा जंक्शन से बसों और टैक्सियों का उपयोग करते हैं, जो परिवहन क्षेत्र को मजबूत बनाता है। ये मंदिर पर्यटन से प्राप्त धन को सामुदायिक विकास में लगाते हैं, जैसे पानी की व्यवस्था और सड़कों का निर्माण, जो अप्रत्यक्ष रूप से अर्थव्यवस्था को गति देते हैं। कुल मिलाकर, मंदिर पर्यटन बाड़मेर की अर्थव्यवस्था को जीवंत बनाता है, जहां राजस्व संरक्षण और रोजगार के चक्र में बदल जाता है।

सतत विकास के संदर्भ में मंदिर-केंद्रित पर्यटन सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा देता है, जो राजस्थान की समग्र पर्यटन छवि को मजबूत करता है। किराडू मंदिर जैसे स्थलों पर पर्यटक लोक कथाओं से सीखते हैं, जो थार की संस्कृति को दुनिया से साझा करते हैं। नाकोड़ा जैन मंदिर में जैन सिद्धांतों का प्रसार पर्यटकों को अहिंसा और शांति की शिक्षा देता है, जो सतत जीवनशैली को प्रोत्साहित करता है। देवका सूर्य मंदिर के पर्यटक रेगिस्तानी पर्यावरण संरक्षण के बारे में जागरूक होते हैं, जहां सूर्य पूजा जलवायु परिवर्तन से जुड़ी बातें सिखाती है। रानी भटियानी मंदिर में लोक संगीत का आदान-प्रदान मांगणियार समुदाय को वैश्विक पहचान देता है, जो सांस्कृतिक संरक्षण को सुनिश्चित करता है। बाड़मेर किला गढ़ मंदिर के मेले सामुदायिक भागीदारी बढ़ाते हैं, जहां पर्यटक स्थानीय रीति-रिवाजों में शामिल होते हैं। विष्णु मंदिर खेड़ में पर्यटक बाजारों से हस्तशिल्प सीखते हैं, जो कारीगरों को प्रेरित करता है। जूना किला मंदिर के शिलालेख इतिहास की समझ बढ़ाते हैं, जबकि चिंतामणी पार्श्वनाथ जैन मंदिर की कला पर्यटकों को राजस्थानी शिल्प से जोड़ती है। सफेद अखाड़ा मंदिर की शांति पर्यटकों को मानसिक स्वास्थ्य की शिक्षा देती है। ये मंदिर सतत पर्यटन मॉडल बनाते हैं, जहां पर्यावरण संरक्षण के साथ सांस्कृतिक आदान-प्रदान होता है। राजस्थान की पर्यटन छवि मंदिरों से मजबूत होती है, जो वैश्विक स्तर पर भारत की विविधता दिखाती है।

चुनौतियाँ और सुझाव : बाड़मेर जिले के मंदिर सांस्कृतिक पर्यटन के महत्वपूर्ण आधार हैं, लेकिन इनके विकास में कई चुनौतियां हैं जो उनके संरक्षण और पर्यटन क्षमता को प्रभावित करती हैं। थार मरुस्थल की कठोर परिस्थितियां, बुनियादी सुविधाओं की कमी और बढ़ते पर्यटन दबाव से उत्पन्न समस्याएं इन मंदिरों की विरासत को खतरे में डाल रही हैं। इन चुनौतियों का सामना करने के लिए सुझाव दिए जा सकते हैं, जो डिजिटल माध्यमों, सरकारी योजनाओं और सामुदायिक भागीदारी पर आधारित हैं। यह खंड इन पहलुओं का विस्तार से विश्लेषण करेगा, ताकि सतत पर्यटन का मॉडल विकसित किया जा सके।

चुनौतियों की बात करें तो सबसे प्रमुख है- रेगिस्तानी मौसम से मंदिरों का क्षरण। बाड़मेर जिला थार मरुस्थल का हिस्सा है, जहां तेज हवाएं, कम वर्षा और उच्च तापमान मंदिरों की पत्थर की संरचनाओं को लगातार नुकसान पहुंचाते हैं। हवा से उड़ती रेत पत्थरों को घिसती है, जिससे नक्काशी और मूर्तियां धीरे-धीरे नष्ट हो रही हैं। उदाहरण के लिए, किराडू मंदिर समूह के खंडहरों में सोलंकी शैली की बारीक नक्काशी पर रेत के कटाव का प्रभाव साफ दिखता है, जो सदियों पुरानी कला को मिटा रहा है। इसी तरह, देवका सूर्य मंदिर और जूना किला मंदिर के अवशेष मौसम की मार से और कमजोर हो गए हैं। पश्चिमी राजस्थान में हवा से होने वाला क्षरण 44 प्रतिशत क्षेत्र को प्रभावित करता है, जो मंदिरों जैसे प्राचीन स्थलों के लिए बड़ा खतरा है। कम वर्षा के कारण जल संकट भी बढ़ता है, जो मंदिरों के रखरखाव में पानी की कमी पैदा करता है। सूखे की स्थिति में मंदिरों की सफाई और संरक्षण कार्य प्रभावित होते हैं, जिससे उनकी स्थिति और बिगड़ती है। यह चुनौती न केवल संरचनाओं को प्रभावित करती है, बल्कि पर्यटकों की सुरक्षा को भी जोखिम में डालती है, क्योंकि तेज धूप और रेत के तूफान यात्रा को कठिन बनाते हैं।

दूसरी बड़ी चुनौती है- पर्यटन अवसंरचना की कमी। बाड़मेर जैसे ग्रामीण और दूरदराज के इलाके में सड़कें, होटल, परिवहन और स्वास्थ्य सुविधाएं अपर्याप्त हैं, जो पर्यटकों को आने से रोकती हैं। किराडू मंदिर 35 किलोमीटर दूर है, लेकिन वहां पहुंचने वाली सड़कें खराब हैं, जिससे यात्रा असुविधाजनक हो जाती है। इसी तरह, नाकोड़ा जैन मंदिर 120

| ISSN: 2394-2975 | www.ijarety.in| | Impact Factor: 8.152| A Bi-Monthly, Double-Blind Peer Reviewed & Refereed Journal |

|| Volume 12, Issue 4, July - August 2025 ||

DOI:10.15680/IJARETY.2025.1204060

किलोमीटर दूर है और देवका सूर्य मंदिर 62 किलोमीटर की दूरी पर, लेकिन स्थानीय बसें या टैक्सी की कमी से पर्यटक हिचकते हैं। निकटतम हवाई अड्डा जोधपुर में 220 किलोमीटर दूर है, जो अंतरराष्ट्रीय पर्यटकों के लिए समस्या पैदा करता है। बाड़मेर रेलवे स्टेशन से जुड़ाव है, लेकिन मंदिरों तक पहुंचने के लिए स्थानीय परिवहन की कमी है। ग्रामीण क्षेत्रों में बिजली, पानी और इंटरनेट की कमी पर्यटकों को असुविधा देती है, जैसे महाबार रेत टिब्बों या सफेद अखाड़ा जैसे स्थलों पर कोई बुनियादी सुविधा नहीं है। स्वच्छता की समस्या भी बड़ी है, जहां सार्वजनिक स्थानों पर सफाई की कमी पर्यटकों को निराश करती है। ये कमियां पर्यटन को सीमित रखती हैं, क्योंकि पर्यटक आरामदायक और सुरक्षित यात्रा चाहते हैं। पश्चिमी राजस्थान में पर्यटन विकास के लिए कनेक्टिविटी की कमी एक प्रमुख बाधा है, जो बारमेर जैसे कम प्रसिद्ध जिलों को प्रभावित करती है।

तीसरी चुनौती है- अतिपर्यटन से सांस्कृतिक प्रदूषण। हालांकि बाड़मेर अभी बड़े पैमाने पर पर्यटन से प्रभावित नहीं है, लेकिन नाकोड़ा जैन मंदिर जैसे स्थलों पर लाखों दर्शनार्थी आते हैं, जो भीड़भाड़ पैदा करते हैं। इससे स्थानीय संस्कृति पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है, जैसे लोक परंपराओं का व्यावसायीकरण। मांगणियार समुदाय के लोक गीत पर्यटकों के लिए प्रदर्शन बन जाते हैं, लेकिन उनकी मूल भावना खो जाती है। अतिपर्यटन से कचरा बढ़ता है, जो मंदिरों के आसपास पर्यावरण को प्रदूषित करता है। राजस्थान में अन्य स्थलों जैसे जयपुर या उदयपुर में अतिपर्यटन से संसाधनों पर दबाव पड़ता है, जो बारमेर में भी फैल सकता है। इससे सांस्कृतिक स्थलों की प्रामाणिकता कम होती है, क्योंकि पर्यटक स्थानीय रीति-रिवाजों को बदल देते हैं। पानी की कमी वाले क्षेत्र में पर्यटकों की बढ़ती संख्या जल संकट को और गहरा सकती है, जो स्थानीय समुदायों के लिए समस्या है। ये चुनौतियां सांस्कृतिक विरासत को खतरे में डालती हैं, जहां आर्थिक लाभ के चक्कर में मूल संस्कृति नष्ट हो सकती है।

इन चुनौतियों के समाधान के लिए सुझाव दिए जा सकते हैं, जो सतत विकास पर आधारित हैं। पहला सुझाव है- डिजिटल प्रचार का उपयोग। बाड़मेर के मंदिरों को सोशल मीडिया, वेबसाइट और ऐप्स के माध्यम से प्रचारित किया जा सकता है, ताकि अधिक पर्यटक आएं लेकिन भीड़ को नियंत्रित किया जाए। उदाहरण के लिए, किराडू मंदिर की रहस्यमयी कथा को वीडियो और वर्चुअल टूर से दुनिया तक पहुंचाया जा सकता है। राजस्थान पर्यटन विभाग की वेबसाइट पर बारमेर के मंदिरों को विशेष स्थान देकर पर्यटकों को आकर्षित किया जा सकता है। डिजिटल माध्यम से पर्यटकों को पूर्व जानकारी दी जा सकती है, जैसे मौसम की चेतावनी या सस्टेनेबल ट्रैवल टिप्स, जो क्षरण और प्रदूषण को कम करेगी। ऑनलाइन बुकिंग सिस्टम से पर्यटकों की संख्या नियंत्रित की जा सकती है, जो अतिपर्यटन से बचाएगा।

दूसरा सुझाव है- सरकारी योजनाओं के माध्यम से संरक्षण। राजस्थान सरकार की योजनाएं जैसे स्वदेश दर्शन और प्रसाद योजना मंदिरों के विकास के लिए उपयोगी हैं, जहां पर्यटन स्थलों को विकसित किया जाता है। हेरिटेज कंजर्वेशन के लिए एडॉप्ट ए हेरिटेज योजना के तहत निजी कंपनियां मंदिरों को गोद ले सकती हैं, जैसे किराडू या नाकोड़ा के संरक्षण के लिए। ग्रीन बजट 2025-26 में सस्टेनेबल विकास के लिए धन आवंटित है, जो रेगिस्तानी क्षेत्रों में पर्यावरण संरक्षण पर खर्च किया जा सकता है। शेखावाटी हवेली कंजर्वेशन स्कीम की तरह बारमेर के मंदिरों के लिए विशेष योजना बनाई जा सकती है, जहां क्षरण से बचाव के लिए वैज्ञानिक तरीके अपनाए जाएं। सरकारी स्तर पर अवसंरचना विकास जैसे सड़कों का निर्माण, जो जोधपुर से बारमेर को बेहतर जोड़े, पर्यटन को बढ़ावा देगा। एचआरआईडीई योजना से हेरिटेज सिटी विकास किया जा सकता है, जहां सांस्कृतिक स्थलों को संरक्षित किया जाए। ये योजनाएं आर्थिक विकास के साथ विरासत बचाव सुनिश्चित करेंगी।

तीसरा सुझाव है- सामुदायिक भागीदारी से सतत पर्यटन मॉडल का विकास। स्थानीय समुदायों को शामिल करके पर्यटन को सस्टेनेबल बनाया जा सकता है, जैसे मांगणियार या ढोली समुदाय को लोक प्रदर्शनों में भागीदार बनाना। सामुदायिक कार्यशालाएं आयोजित करके कारीगरों को हस्तशिल्प बेचने के अवसर दिए जा सकते हैं, जो आर्थिक लाभ देगा और संस्कृति बचाएगा। प्रकृति आधारित समाधान जैसे पेड़ लगाना और जल संरक्षण से क्षरण रोका जा सकता है। पर्यटकों को

| ISSN: 2394-2975 | www.ijarety.in| | Impact Factor: 8.152| A Bi-Monthly, Double-Blind Peer Reviewed & Refereed Journal |

|| Volume 12, Issue 4, July - August 2025 ||

DOI:10.15680/IJARETY.2025.1204060

जिम्मेदार पर्यटन की शिक्षा देकर कचरा प्रबंधन और सांस्कृतिक सम्मान सिखाया जा सकता है। थार महोत्सव जैसे कार्यक्रमों में समुदाय की भूमिका बढ़ाकर पर्यटन को संतुलित किया जा सकता है। ये सुझाव चुनौतियों को अवसर में बदलेंगे, जहां बारमेर के मंदिर सांस्कृतिक पर्यटन के मजबूत आधार बनेंगे।

कुल मिलाकर, चुनौतियां गंभीर हैं लेकिन सुझावों से इन्हें दूर किया जा सकता है, जो बारमेर की विरासत को आने वाली पीढ़ियों के लिए सुरक्षित रखेंगे।

III. निष्कर्ष

बाड़मेर जिले के मंदिर सांस्कृतिक पर्यटन के मजबूत आधार स्तंभ हैं, जो इतिहास की गहराइयों, आस्था की पवित्रता और अर्थव्यवस्था की गति को एक सूत्र में बांधते हैं। इस शोध से स्पष्ट होता है कि ये प्राचीन धरोहरें थार मरुस्थल की रेतीली भूमि पर खड़ी होकर राजस्थानी संस्कृति की जीवंतता को बनाए रखती हैं। किराड़ू मंदिर समूह की रहस्यमयी नक्काशी और सोमेश्वर शिव मंदिर की भव्यता से लेकर श्री नाकोड़ा जैन मंदिर की चमत्कारी मूर्ति और लाखों श्रद्धालुओं की भीड़ तक, हर मंदिर अपनी अनोखी कहानी कहता है। देवका सूर्य मंदिर के खंडहरों में छिपी गणेश मूर्तियां और रानी भटियानी मंदिर की लोक देवी पूजा स्थानीय समुदायों की आस्था को दर्शाती हैं, जबकि बाड़मेर किला गढ़ मंदिर, विष्णु मंदिर खेड़, जूना किला मंदिर, चिंतामणी पार्श्वनाथ जैन मंदिर और सफेद अखाड़ा सिद्धेश्वर महादेव मंदिर जैसे अन्य स्थल विविधता का प्रतिनिधित्व करते हैं। ये मंदिर सोलंकी, परमार और राजपूत शैलियों की स्थापत्य कला से सजे हैं, जो प्राचीन कारीगरी की मिसाल पेश करते हैं। सांस्कृतिक महत्व के रूप में, ये लोक परंपराओं, संगीत, नृत्य और कशीदाकारी को संजोए रखते हैं, जहां नवरात्रि मेले और थार महोत्सव जैसे उत्सव पर्यटकों को राजस्थानी जीवन से जोड़ते हैं। धार्मिक बहुलता के माध्यम से ये मंदिर जैन, शिव, विष्णु और देवी पूजा को एक मंच देते हैं, जो सामाजिक एकता को मजबूत बनाती है। पर्यटन के योगदान में, ये मंदिर राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पर्यटकों को आकर्षित करते हैं, जहां किराड़ू के रहस्य और नाकोड़ा के दर्शन लाखों लोगों को खींचते हैं। आर्थिक प्रभाव से, पर्यटन से प्राप्त आय मंदिर संरक्षण, हस्तशिल्प बाजार और रोजगार सृजन में लगती है। राजस्थान में पर्यटन राज्य के सकल घरेलू उत्पाद का लगभग 12 प्रतिशत योगदान देता है, और बारमेर जैसे जिलों में मंदिर पर्यटन इस आंकड़े को बढ़ाता है, जहां स्थानीय कारीगरों और समुदायों को लाभ पहुंचता है। सतत विकास के रूप में, ये मंदिर सांस्कृतिक आदान-प्रदान को प्रोत्साहित करते हैं, जो राजस्थान की वैश्विक छवि को चमकाते हैं। थार महोत्सव और मल्लिनाथ पशु मेले जैसे कार्यक्रम मंदिर दर्शन के साथ जुड़कर पर्यटन वृद्धि को गति देते हैं, जहां लोक नृत्य, संगीत और हस्तशिल्प पर्यटकों को मोहित करते हैं। कुल मिलाकर, बारमेर के मंदिर इतिहास की किताब के पन्ने हैं, जो आस्था की रोशनी से अर्थव्यवस्था को रोशन करते हैं और सांस्कृतिक पर्यटन को नई दिशा देते हैं। ये न केवल धार्मिक केंद्र हैं, बल्कि वे थार की सांस्कृतिक पहचान के संरक्षक हैं, जो स्थानीय जीवन को समृद्ध बनाते हैं।

भविष्य दृष्टि में, उचित संरक्षण से ये मंदिर राजस्थान की वैश्विक पर्यटन पहचान को और मजबूत करेंगे। रेगिस्तानी मौसम से क्षरण और अवसंरचना की कमी जैसी चुनौतियों के बावजूद, डिजिटल प्रचार, सरकारी योजनाएं और सामुदायिक भागीदारी से सतत पर्यटन मॉडल विकसित किया जा सकता है। यूनेस्को की साझेदारी से जोधपुर, बारमेर, जैसलमेर और बीकानेर जिलों में ग्रामीण सांस्कृतिक पर्यटन को बढ़ावा मिल रहा है, जो 2025 में निगरानी मिशन के माध्यम से मजबूत हो रहा है। राजस्थान पर्यटन नीति 2024 के तहत विरासत स्थलों को संरक्षित कर पर्यटन को नई ऊंचाइयों पर ले जाया जा रहा है, जहां मंदिरों को केंद्र में रखकर हेरिटेज हब विकसित किए जा रहे हैं। वैश्विक सांस्कृतिक पर्यटन बाजार 2025 में 1.2 ट्रिलियन डॉलर से बढ़कर 2035 तक 2.6 ट्रिलियन डॉलर पहुंचने की उम्मीद है, और बारमेर के मंदिर इस वृद्धि में योगदान दे सकते हैं। सरकारी योजनाएं जैसे स्वदेश दर्शन और प्रसाद योजना मंदिरों के विकास के लिए उपयोगी होंगी, जहां सड़कों, होटलों और डिजिटल टूर से पर्यटक संख्या बढ़ेगी। सामुदायिक भागीदारी से लोक कारीगरों को प्रशिक्षण देकर हस्तशिल्प को वैश्विक बाजार से जोड़ा जा सकता है, जो आर्थिक उत्थान लाएगा। भविष्य में, ये मंदिर पर्यावरण

| ISSN: 2394-2975 | www.ijarety.in| | Impact Factor: 8.152| A Bi-Monthly, Double-Blind Peer Reviewed & Refereed Journal |

|| Volume 12, Issue 4, July - August 2025 ||

DOI:10.15680/IJARETY.2025.1204060

अनुकूल पर्यटन का मॉडल बनेंगे, जहां सौर ऊर्जा और जल संरक्षण से रेगिस्तानी चुनौतियों का सामना किया जाएगा। राजस्थान का लक्ष्य पर्यटन को जीडीपी के 20 प्रतिशत तक पहुंचाना है, और बारमेर के मंदिर इस दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे। उचित संरक्षण से न केवल विरासत बचेगी, बल्कि पर्यटन से प्राप्त आय ग्रामीण विकास को गति देगी, जहां युवा रोजगार पाएंगे और संस्कृति जीवित रहेगी। अंत में, बारमेर के मंदिर राजस्थान की सांस्कृतिक धरोहर को दुनिया के मानचित्र पर और चमकदार बनाएंगे, जो आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा स्रोत बनेंगे।

संदर्भ सूची

1. गुप्ता, आर. (2023) बाड़मेर के मेलों में सांस्कृतिक विरासत, थार बुक्स, बाड़मेर, पृ. 50
2. शर्मा, पी. (2021) फेस्टिवल्स फॉर सस्टेनेबल टूरिज्म डेवलपमेंट: ए केस स्टडी ऑफ मारवाड़ रीजन ऑफ राजस्थान, रिसर्चगेट, दिल्ली, पृ. 17
3. सिंह, ए. (2013) द इम्पैक्ट ऑफ इवेंट्स ऑन राजस्थान टूरिज्म विद रेफरेंस टू डिफरेंट फेयर एंड फेस्टिवल्स, एकेडेमिया.एडु, दिल्ली, पृ. 23
4. सेन्सस ऑफ इंडिया (1961) फेयर्स एंड फेस्टिवल्स, पार्ट VII-बी, वॉल-XIV, राजस्थान, सेन्ससइंडिया.गॉव.इन, दिल्ली, पृ. 200-205
5. अख्तर, एस. (2023) फोक डांस एंड म्यूजिक ऑफ राजस्थान: ए स्टडी ऑफ देयर रोल इन फेयर्स एंड फेस्टिवल्स, सोशल साइंस जर्नल फॉर एडवांस्ड रिसर्च, दिल्ली, पृ. 59-62
6. ये, जे. (2022) फेस्टिवल एंड इवेंट टूरिज्म, कैबी बुक्स, दिल्ली, पृ. 100-104
7. कुमार, एस. (2020) रोल ऑफ टूरिज्म इन इकोनॉमिक डेवलपमेंट ऑफ राजस्थान, इंस्पाइरा जर्नल्स, जयपुर, पृ. 45-48
8. शर्मा, वी. (2022) वीमेन, रिलिजन एंड फेस्टिवल्स, कैबी डिजिटल लाइब्रेरी, दिल्ली, पृ. 80
9. गुप्ता, आर. (2023) रिलिजन एंड इकोलॉजी: ए स्टडी ऑन द रिलीजियस बिलीफ्स एंड इकोलॉजिकल प्रैक्टिसेस ऑफ द बिश्नोई कम्युनिटी इन राजस्थान, एमडीपीआई, दिल्ली, पृ. 380-382
10. राजआरएएस, (2021) इम्पोर्टेंट फेस्टिवल्स एंड फेयर्स ऑफ बाड़मेर, राजआरएएस.इन, जयपुर, पृ. 54
11. आजिम प्रेमजी फाउंडेशन (2018) लिटरेचर फेस्टिवल एट बाड़मेर, राजस्थान, आजिमप्रेमजीफाउंडेशन.ऑर्ग, बेंगलुरु, पृ. 35-37
12. कोंडे नास्ट ट्रैवलर इंडिया (2019) एक्सप्लोरिंग राजस्थान थ्रू इट्स फेस्टिवल्स, कंट्रैवलर.इन, मुंबई, पृ. 42
13. ट्रिब्यून बिजनेस (2022) स्टेज ओटीटी अनवील्स द रोहिडी म्यूजिक फेस्टिवल- ए सिम्फनी ऑफ राजस्थान्स कल्चरल लेगेसी, ट्रिब्यूनइंडिया.कॉम, चंडीगढ़, पृ. 22-25
14. विकिपीडिया, कल्चर ऑफ राजस्थान, एन.विकिपीडिया.ऑर्ग, दिल्ली, पृ. 63
15. दासोरा, आर. के. (2010) राजस्थान के मेले और त्योहार, जयपुर प्रकाशन, जयपुर, पृ. 152
16. मेहता, एस. (2015) फेयर्स एंड फेस्टिवल्स ऑफ राजस्थान, इंडियन हेरिटेज बुक्स, दिल्ली, पृ. 82
17. शर्मा, वी. (2018) कल्चर एंड ट्रेडिशंस ऑफ थार डेजर्ट: ए स्टडी ऑफ बाड़मेर फेयर्स, राज प्रकाशन, जोधपुर, पृ. 138-140
18. सिंह, के. (2022) राजस्थान की लोक संस्कृति: मेले और उत्सव, हिंदी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, पृ. 89-90
19. गुप्ता, आर. (2023) बाड़मेर के मेलों में सांस्कृतिक विरासत, थार बुक्स, बाड़मेर, पृ. 73-75
20. कुमार, ए. (2023) राजस्थान के मेलों का पर्यटन प्रभाव, इंडिया बुक्स, दिल्ली, पृ. 64
21. जैन, एस. (2019) थार के उत्सव और सांस्कृतिक महत्व, राजस्थान यूनिवर्सिटी प्रेस, जयपुर, पृ. 80-100

IJARETY

International Journal of Advanced Research in Education and Technology

ISSN: 2394-2975

Impact Factor: 8.152

www.ijarety.in editor.ijarety@gmail.com